काफूर की मस्जिद और पत्थर का घोड़ा (1605 ई॰)

तीन महराबदार छोटी सी यह मस्जिद 13 फीट लम्बी और 10 फीट चौड़ी है। इसके शीर्ष पर एक गुम्बद है। इसके पीछे कुछ कमरे बने थे जो अब लुप्त हो गये हैं। इसका कुंआ भी भर दिया गया है। इसके पास एक चबूतरे पर लाल पत्थर का जीविताकार एक घोड़ा बना है और एक अन्य चबूतरे पर पत्थर का एक 'ताबीज़' (कब्र-पाषाण) रखा है। महराबों के ऊपर तीन फलकों पर फ़ारसी का एक शिलालेख उत्कीर्ण है। इसमें लिखा है कि इस मस्जिद का निर्माण हिजरी 1015/1605 ई॰ में ख्वाजा काफूर के लिये, (आगरे से दिल्ली जाने वाली) सड़क पर, इतबारी खाँ ने कराया। उसे मुगल बादशाह जहाँगीर की कृपा से उत्कृष्ट पद प्राप्त हुआ था। यह दृष्टव्य है कि इतबार खाँ ख्वाजासरा एक महत्वपूर्ण सामन्त और जहाँगीर के हरम (रनिवास) का नाज़िर (अधीक्षक) था। 'इतबार' बिरुद के अनुरूप ही वह अत्यन्त स्वामिभक्त था और जहाँगीर उस पर पूरा भरोसा करता था। उसने अपनी आत्मकथा में उसकी कई बार प्रशंसा की है। 1622 में इतबार खाँ आगरे का सूबेदार था और किले और ख़ज़ाने की रक्षा का दायित्व भी उसके पास था। 1623 में जब बाग़ी शाहज़ादा शाहजहाँ ने आगरे को हथियाने का प्रयत्न किया तो इतबार ने उसकी रक्षा की और बचा लिया। उसे 'मुमताज़ खाँ' का बिरुद और 6000 जात और 5000 सवार का मन्सब दिया गया। उसी वर्ष उसकी मृत्यु हो गयी। ऐसा लगता है कि ख्वाज़ा काफूर सूफ़ी सन्त थे और इतबार खाँ ने यह मस्जिद कुछ आवास-कक्ष और एक कुआँ उनके लिये बनवाये थे। पत्थर के घोड़े के समीप स्थित खुला हुआ मकबरा उनका ही है और यह पत्थर का घोड़ा उनके ही लाड़ले घोड़े की अनुकृति है। इतबार खाँ का विस्तीर्ण **'रौज़ा' (बाग में स्थित मकबरा)** भी इसके पड़ौस में ही स्थित था। यह भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (भारत सरकार) द्वारा संरक्षित इमारत है।